चिकित्सा विज्ञान की द्रष्टि से आत्मा का क्या स्वरूप है?

शरीर में उसका रहने का स्थान कहौ है?

बी॰ के॰ प्रफुलचंद्र शाह (मो) 9825892710

‘मैं कौन हूँ?’ यह प्रश्न सदियों से पूछा जा रहा है। इसका उत्तर हमारे ऋषि-मुनियों तथा विविध धर्मो के स्थापकोंने धर्मग्रन्थों में, शास्त्रो में तथा पुराणों में देने का प्रयत्न जरूर किया है । उन सभीका आमतौर पर यह मानना है कि पाँच निर्जीव तत्वों से बने हमारे इस नाशवंत शरीर से भिन्न, हम स्वयं एक अजर, अमर, अविनाशी चैतन्य शक्ति हैं। इस चैतन्य शक्ति को हिन्दू धर्म में आत्मा, इस्लाम धर्म में रूह, और ईसाई धर्म में सोल (soul) के नाम से उल्लेख किया गया है । लेकिन इस बारे में कोई भी सटीक, तार्किक या वैज्ञानिक समर्थन नहीं होने के कारण आज के इस विज्ञान युग में अनेक लोग हैं जो इसको स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते हैं । लेकिन पिछले कई दशकों में विश्व के कई प्रसिध्ध विश्व विद्यालयों में पारभौतिक विज्ञानं (Metaphysics), परामनोविज्ञान (Parapsychology) और चिकित्सा विज्ञान (Medical science) के क्षेत्र में किए गए संशोधनों ने भी निर्जीव एवं नाशवंत शरीर में स्थित चेतना का स्वीकार किया हैं, जिसको वो लोग पारभौतिक चेतना (Metaphysical consciousness) कहते हैं। वो लोग स्पष्ट रूप से स्वीकारते हैं कि यह पारभौतिक चेतना अर्थात आत्मा (Soul) अविनाशी और अमर है | मनुष्य के मृत्यु के बाद भी उसका अस्तित्व रहता है और पुनर्जन्म लेता है। इस संबंध में अमेरिका के प्रसिध्ध वर्जिनीया विश्व विद्यालय में किए गाए संशोधन उल्लेख करने योग्य हैं ।

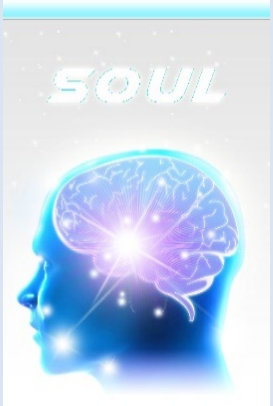

विज्ञान की द्रष्टि से आत्मा का स्वरूप :

विज्ञान इतने तक में रुका नहीं है, परंतु आत्मा के स्वरूप के बारे में और शरीर में आत्मा किस स्थान में स्थित है उसके बारे में भी स्पष्टता की है । आत्मा के स्वरूप के विषय में विज्ञान कहता है कि पराभौतिक चेतना न तो कोई भौतिक तत्व (physical matter) है, न तो कोई भौतिक शक्ति (physical energy) है, इसलिए उसके कोई आयाम (Dimensions) नहीं हो शकता है अर्थात इस पराभौतिक चेतना की कोई लंबाई, चौड़ाई या ऊँचाई नहीं हो सकती है । इसलिए उसका आकार ‘बिन्दु’ से अतिरिक्त कुछ भी नहीं हो सकता । इसके अलावा विज्ञान इस पराभौतिक चेतना को सूक्ष्म शक्ति के स्त्रोत के रूप में स्वीकार करता है| विज्ञान यह भी मानता है कि शक्ति का स्त्रोत बिन्दु रूप में होता है| इसलिए शरीर में स्थित इस पराभौतिक चेतना का स्वरूप स्वयं प्रकाशित बिन्दु (Luminous point of light) है, जो चमकते हुए दिव्य सितारे के समान है।

उपनिषद तथा गीता जैसे शास्त्रों में भी आत्मा के स्वरूप को परमाणु से भी सूक्ष्म ज्योतिर्मय प्रकाश बिन्दु के रूप में स्वीकारा गया है । इसके अतिरिक्त विश्व के महान धर्मस्थापकों को, ऋषि-मुनियों को, तपस्विओ को साधना के दौरान आत्मा के

जो साक्षात्कार हुए हैं, वे भी ज्योतिर्मय प्रकाश बिन्दु के रूप में ही हुए हैं ।

विज्ञान कि द्रष्टि से आत्मा का शरीर में स्थान :

पाँच निर्जीव तत्वो से बने हुए इस विशाल शरीर में चैतन्य शक्ति आत्मा कहाँ बैठकर शरीर का संचालन करती होगी- यह एक महत्व का प्रश्न है । आइए, आजका आधुनिक चिकित्सा विज्ञान इस विषय में क्या कहता है, इसे समझे । हमारे शरीर में पाचन तंत्र, उत्सर्जन तंत्र, संचार प्रणाली, श्वसन प्रणाली जैसी अनेक प्रणालियाँ निरंतर कार्यरत हैं । इसके अतिरिक्त हमारे शरीर में निरंतर अनेक स्वैच्छिक और अस्वैच्छिक क्रियाएँ भी चलती रहती हैं । इन सबका नियंत्रण और नियमन शरीर की मुख्य दो प्रणालियों द्वारा होता है :

1. केन्द्रिय तंत्रिका प्रणाली (central nervous system)

2. अंत:स्त्रावी ग्रंथियों की प्रणाली (Endocrine system)

केंद्रीय तंत्रिका प्रणाली का नियमन दिमाग (Brain) द्वारा होता है और दिमाग का अंतिम नियंत्रण मस्तिष्क के केन्द्र स्थान पर आए हुए थेलेमस और हाइपोथेलेमस द्वारा होता है । उसी प्रकार अंत:स्त्रावी ग्रंथियों की प्रणाली में पिच्युटरी, पिनियल, थाइरोइड, एड्रीनल, थायमस, गोनाड, इत्यादि ग्रंथियां आई हुई है। उसका अंतिम संचालन किंग (King)ग्रंथियां मानी जानेवाली पिच्युटरी और पीनियल ग्रंथि द्वारा होता है । अब महत्वपूर्ण बात यह है कि पिच्युटरी, थेलेमस, हाइपोथेलेमस, और पीनियल जैसे शरीर के अंतिम नियंत्रण के अंग एक ही स्थान पर है | अर्थात विज्ञान स्पष्ट रूप से स्वीकारता है कि समग्र शरीर के संचालन का कोई अंतिम स्थान हो तो वह है मस्तिष्क का केन्द्र स्थान । आइए, अब हम मस्तिष्क के केन्द्र स्थान पर आए हुए तथा एक दूसरे के साथ जुड़े हुए इन चार महत्व पूर्ण अंगो के कार्य को समझे, जिससे आत्मा के शरीर में निवास स्थान के बारे में ज्यादा स्पष्टता होगी।

थेलेमस का कार्य सेरिब्रल कोरटेक्स के साथ समन्वय करके पूरे शरीर में से आनेवाली संवेदनाओं को इकठ्ठा करनेका, उसका समन्वय करनेका और उसको मस्तिष्क के विविध संवेदन केन्द्रों तक पहुँचाने का है। इस दौरान मस्तिष्क में विचार, कल्पना, तर्क, पहचान, विश्लेषण, निष्कर्ष, समझ, निर्णय करने जैसे मानसिक कार्य चलते रहते हैं । इन सब सिग्नलों को शरीर की मांसपेशियों तक पहुँचाने का काम भी थेलेमस के नियंत्रण में होता है। इस तरह थेलेमस के आसपास करोड़ों नसें घूमती हैं और उसके कारण Corona Radiate की रचना होती है । इस तरह मस्तिष्क के सभी कार्यों पर थेलेमस का नियंत्रण रहता है। थेलेमस का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है विचारों में से भाव और भावनाओं को संस्कारित करना । उत्पन्न हुई भावनाए याद में रूपांतरित होती हैं जो अंत में मनोचित्रण में परिवर्तित होती है। इसके अलावा वह जागृत अवस्था में शरीर को स्वस्थ और जागरूक रखने का कार्य करता है ।

हाइपोथेलेमस का मुख्य कार्य शरीर को स्वस्थ रखने का और शरीर में संतुलन बनाए रखने का है । वह अंत:स्त्रावी ग्रंथियों की प्रणाली और केंद्रीय स्नायुतंत्र के बीच समन्वय बनाए रखने का कार्य करता है। शरीर का तापमान, भूख, वजन, ब्लड-प्रेशर, नींद, शरीर द्रव इत्यादि को नियंत्रण में रखने का कम भी करता है|

हमारे मन में उत्पन्न होनेवाली भावनाओं को भी वह नियंत्रित करता है ।

पिच्युटरी ग्रंथि का मुख्य कार्य शरीर की दूसरी अंत:स्त्रावी ग्रंथयों को तथा उनमेँ से होनेवाले होरमोन्स के स्त्राव को नियंत्रित करने का है । हमारे शरीर की अनेक क्रियाओं का नियंत्रण इन विविध स्त्रावों के द्वारा होता है । इससे यह स्पष्ट होता है कि अन्तःस्त्रावी प्रणाली का अंतिम नियंत्रण पिच्युटरी ग्रंथि के पास है ।

पीनियल ग्रंथि में से मेलाटोनिन नाम के होरमोन का स्त्राव होता है, जो पूरे दिन के दौरान हमारी नींद कि साइकल को नियंत्रित करता है । हमारे विचारों और भावनाओं को भी प्रभावित करता है ।

उपरोक्त चर्चा से विज्ञान की द्रष्टि से भी शरीर के अंतिम नियंत्रण का केन्द्र दो भृकुटि के पीछे मस्तिष्क के केन्द्र बिन्दु पर स्थित है। इसलिए आत्मा, जो शरीर रूपी मोटर का ड्राइवर है, नियंत्रक है, यदि इस स्थान पर बैठे तभी शरीर का उपयोग कर सकता है, संचालन कर सकता है। इसलिए आजका चिकित्सा विज्ञान भी स्वीकारता है कि पराभौतिक चेतना (आत्मा) का स्थान शरीर में मस्तिष्क के केन्द्र में है|

इसके अतिरिक्त हमारी भारतीय संस्कृति में दो भृकुटि के बीच माथे पर टीका-बिंदी-तिलक लगाने की प्रथा चली आ रही है । वह बिन्दु रूप आत्मा का प्रतीक है| हम व्यक्ति को देखें तो उसको भृकुटि स्थित आत्मा की द्रष्टि से देखेँ । उस भावना से माथे पर टीका-बिंदी लगाने की प्रथा चलती आई है । यह प्रथा भी इस तथ्य का समर्थन करती है कि आत्मा का स्थान दो भृकुटि के बीच में मस्तिष्क के केन्द्र में है ।

ऋषिमुनियों को साधना के दौरान आत्मा का जो साक्षात्कार हुआ है वह भी ज्योतिर्मय प्रकाशबिन्दु के रूप में भृकुटि के बीच हुआ है । इसलिए जब भी हम आत्म चिंतन, आत्मदर्शन का अभ्यास करें तब सबसे पहले हमारा ध्यान मस्तिष्क के केन्द्र में केन्द्रित करके, आत्मा के ज्योति स्वरूप का मनोचित्रण करके आत्मचिंतन को शुरू करना चाहिए । भारतीय संस्कृति की विरासत के समान राजयोग के अभ्यास की शुरुआत भी, इस तरह से किए गए, आत्मचिंतन से ही होती है । आत्मा की स्मृति में स्थित होने के बाद ज्योति स्वरूप परमात्मा के साथ अनुसंधान प्रस्थापित कर हम परम शांति, परम आनंद का अनुभव कर सकते हैं ।

-: ॐ शांति :-